Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

रानी लक्ष्मीबाई भारतीय महिला आंदोलनकारीः एक विश्लेषण

गीता

शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर –124021, रोहतक

डॉ. यसपाल सिंह

शोध निर्देशिका, सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर –124021, रोहतक

शोध सारः

झाँसी की रानी, रानी लक्ष्मीबाई को न केवल 1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान उनकी बहादुरी के लिए याद किया जाता है, बल्कि भारतीय इतिहास में नारीवादी प्रतिरोध के एक स्थायी प्रतीक के रूप में भी याद किया जाता है। यह लेख इस बात की पड़ताल करता है कि रानी लक्ष्मीबाई का जीवन, उनका नेतृत्व और औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध उनका संघर्ष किस प्रकार आधुनिक भारतीय नारीवादी आंदोलनों को आकार देने में सहायक रहा है। यह इस बात की भी जाँच करता है कि किस प्रकार नारीवादी विद्वानों, कार्यकर्ताओं और सांस्कृतिक आख्यानों द्वारा उनकी छवि का पुनर्निर्माण किया गया है, ताकि पितृसत्ता और उपनिवेशवाद को चुनौती दी जा सके और किस प्रकार उनकी विरासत भारत में समकालीन नारीवादी संघर्षों को प्रेरित करती है। ऐतिहासिक विवरणों, साहित्यिक प्रस्तुतियों और नारीवादी व्याख्याओं के गहन विश्लेषण के माध्यम से, यह लेख यह तर्क प्रस्तुत करता है कि रानी लक्ष्मीबाई की विरासत उनके तात्कालिक ऐतिहासिक संदर्भ से कहीं अधिक व्यापक है, और यह भारत में महिला सशक्तिकरण के एक सशक्त प्रतीक के रूप में उभरकर सामने आती है।

मुख्य शब्दः रानी लक्ष्मीबाई, नारीवादी प्रतीक, महिला सशक्तिकरण, औपनिवेशिक प्रतिरोध, पितृसत्ता, नारीवादी आंदोलन, लैंगिक समानता, महिलाओं के अधिकार, ऐतिहासिक हस्तियाँ, सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व, नेतृत्व, लैंगिक मानदंड, राष्ट्रवाद, नारीवादी व्याख्या, वीरांगना रानी, झाँसी, महिलाओं का इतिहास, नारीवादी सक्रियता, विरासत।

परिचयः

रानी लक्ष्मीबाई , झाँसी की रानी, भारतीय इतिहास में एक महान हस्ती बनी हुई हैं। 1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान उनके नेतृत्व और ब्रिटिश औपनिवेशिक ताकतों के खिलाफ उनके विरोध ने उन्हें एक राष्ट्रीय नायिका और प्रतिरोध का एक स्थायी प्रतीक बना दिया है। जहाँ एक ओर उनकी सैन्य उपलब्धियों को बड़े पैमाने पर दर्ज किया गया है, वहीं रानी लक्ष्मीबाई की एक नारीवादी प्रतीक के रूप में भूमिका पर विद्वानों का ध्यान लगातार बढ़ रहा

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

है, विशेष रूप से भारत में आधुनिक नारीवादी आंदोलनों के संदर्भ में। पितृसत्तात्मक मानदंडों के खिलाफ उनका विरोध, एक योद्धा रानी के रूप में उनकी भूमिका, और पुरुषों के वर्चस्व वाले क्षेत्र में नेतृत्व करने की उनकी क्षमताकृइन सभी ने एक नारीवादी प्रतीक के रूप में उनकी स्थिति को मजबूत किया है। यह लेख इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे रानी लक्ष्मीबाई की विरासत को समकालीन भारतीय नारीवादियों ने अपनाया है, और कैसे उनकी कहानी पितृसत्ता और औपनिवेशिक उत्पीड़नकृदोनों के खिलाफ प्रतिरोध को प्रेरित करती रहती है।

रानी लक्ष्मीबाई की ऐतिहासिक भूमिका:

रानी लक्ष्मीबाई का जन्म 1828 में वाराणसी में हुआ था और 1842 में उनका विवाह झाँसी के महाराजा गंगाधर राव से हुआ। अपने पति की मृत्यु और व्यपगत सिद्धांत के तहत झाँसी पर ब्रिटिश कब्जे के बाद, लक्ष्मीबाई ने ब्रिटिश सत्ता के आगे झुकने से इनकार कर दिया। उन्होंने 1857 में अंग्रेजों के खिलाफ एक भीषण विद्रोह में अपनी सेना का नेतृत्व किया, और इस विद्रोह की प्रमुख हस्तियों में से एक बन गईं। 1858 में अपनी अंतिम हार और मृत्यु के बावजूद, उनके साहस और दृढ़ संकल्प ने भारतीय इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ी।

ब्रिटिश उपनिवेशवाद और पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं, दोनों के प्रति उनके विरोध ने उन्हें भारत में नारी शक्ति और प्रतिरोध का प्रतीक बना दिया है[i]।

एक नारीवादी प्रतीक के रूप में रानी लक्ष्मीबाई:

जिन सबसे महत्वपूर्ण तरीकों से रानी लक्ष्मीबाई की विरासत ने आधुनिक नारीवादी आंदोलनों को प्रभावित किया है, उनमें से एक है पितृसत्तात्मक मानदंडों के प्रति उनका विरोध। ऐसे समय में जब महिलाओं को बड़े पैमाने पर घरेलू भूमिकाओं तक ही सीमित रखा जाता था, रानी लक्ष्मीबाई ने एक सैन्य नेता की भूमिका निभाई। उन्होंने एक सेना की कमान संभाली और ऐसे युद्धों में हिस्सा लिया जिन पर पारंपरिक रूप से पुरुषों का वर्चस्व था। उनके नेतृत्व ने 19वीं सदी के भारत की प्रचलित लैंगिक अपेक्षाओं को चुनौती दी, जहाँ महिलाओं को अक्सर राजनीतिक और सैन्य मामलों में निष्क्रिय माना जाता था[ii]।

आधुनिक नारीवादी विमर्श में, रानी लक्ष्मीबाई के जीवन की व्याख्या, भारतीय समाज और औपनिवेशिक शासन, दोनों द्वारा महिलाओं पर लगाई गई सीमाओं के एक सशक्त अस्वीकरण के रूप में की गई है। नारीवादी विद्वानों ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि कैसे उन्होंने एक विधवा के रूप में अपनी स्थिति का उपयोग किया, एक ऐसी स्थिति जो 19वीं सदी के भारत में आमतौर पर हाशिए पर धकेले जाने से जुड़ी थी ताकि वे अपना अधिकार जता सकें और अंग्रेजों को चुनौती दे सकें[पपप]। ऐसा करके, उन्होंने महिलाओं के लिए तय की गई

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

पारंपरिक भूमिकाओं को उलट दिया, और भारतीय महिलाओं की आने वाली पीढ़ियों के लिए सशक्तिकरण का प्रतीक बन गईं।

आधुनिक नारीवादी आंदोलनों के लिए प्रेरणा:

रानी लक्ष्मीबाई की विरासत भारत में आधुनिक नारीवादी आंदोलनों के लिए प्रेरणा का स्रोत रही है, विशेष रूप से उन आंदोलनों के लिए जो महिलाओं द्वारा पितृसत्तात्मक उत्पीड़न का विरोध करने की आवश्यकता पर जोर देते हैं। भारतीय नारीवादी आंदोलन, जिसने 20वीं सदी में गति पकड़ी, अक्सर लैंगिक असमानता को चुनौती देने और महिलाओं के अधिकारों की वकालत करने के लिए रानी लक्ष्मीबाई जैसी ऐतिहासिक हस्तियों से प्रेरणा लेता था।

रानी लक्ष्मीबाई की एक योद्धा रानी के रूप में छवि जिन्होंने अपने राज्य और अपनी व्यक्तिगत स्वायत्तता, दोनों के लिए लड़ाई लड़ी का उपयोग नारीवादी कार्यकर्ताओं द्वारा उत्पीड़न के सामने महिलाओं की सक्रियता और प्रतिरोध के महत्व को उजागर करने के लिए किया गया है[iv]। उदाहरण के लिए, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान, राष्ट्रवादी नेताओं ने अक्सर महिलाओं को स्वतंत्रता की लड़ाई में शामिल होने के लिए प्रेरित करने हेतु रानी लक्ष्मीबाई की विरासत का आह्वान किया। सरोजिनी नायडू और सुभाष चंद्र बोस जैसे नारीवादी नेताओं ने रानी लक्ष्मीबाई के साहस की प्रशंसा की, और स्वतंत्रता की लड़ाई में महिलाओं की भागीदारी के प्रतीक के रूप में उनका उपयोग किया[v]। यह विरासत स्वतंत्रता के बाद के भारत में भी जारी रही, जहाँ लैंगिक समानता और महिलाओं के सशक्तिकरण की वकालत करने वाले नारीवादी आंदोलनों ने औपनिवेशिक और पितृसत्तात्मक, दोनों ताकतों के प्रति उनके विरोध से लगातार प्रेरणा ली।

रानी लक्ष्मीबाई का सांस्कृतिक चित्रण और नारीवादी व्याख्याएँ:

एक नारीवादी प्रतीक के रूप में रानी लक्ष्मीबाई की विरासत को साहित्य, फिल्मों और लोकप्रिय मीडिया में सांस्कृतिक चित्रणों के माध्यम से और मजबूत किया गया है। कई जीवनियों, उपन्यासों और फिल्मों में उन्हें एक वीर हस्ती के रूप में चित्रित किया गया है, जिसमें अक्सर एक योद्धा रानी और औपनिवेशिक शासन के खिलाफ प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में उनकी भूमिका पर जोर दिया गया है। इनमें से कई चित्रणों में, उनके शौर्य में उनका स्त्री होना एक केंद्रीय भूमिका निभाता है, क्योंकि उन्होंने न केवल ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती दी, बल्कि अपने समय के पितृसत्तात्मक मानदंडों को भी चुनौती दी। उदाहरण के लिए, मणिकर्णिका द क्वीन ऑफ झाँसी (2019) जैसी लोकप्रिय फिल्मों ने रानी लक्ष्मीबाई को महिला सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में चित्रित किया, जिसमें उनकी ताकत, साहस और दृढ़ संकल्प को उजागर किया गया[vi]। ऐसे चित्रणों ने उनकी विरासत की नारीवादी पुनर्कल्पना में योगदान दिया है, जिसमें एक ऐसे नेता के रूप में उनकी भूमिका पर जोर दिया गया है,

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

जिसने लिंग–आधारित उत्पीड़न को चुनौती दी[अपप]। साहित्यिक कृतियों ने भी एक नारीवादी प्रतीक के रूप में उनकी छवि को गढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सुभद्रा कुमारी चौहान जैसी कवयित्रियों ने उन्हें झाँसी की रानी जैसी कृतियों में अमर कर दिया है। यह एक ऐसी कविता है जो उनके शौर्य और जुझारूपन का गुणगान करती है[viii]। आधुनिक नारीवादी विद्वानों ने रानी लक्ष्मीबाई की विरासत की ऐसी व्याख्याएँ की हैं, जो औपनिवेशिक और पितृसत्तात्मक, दोनों तरह के वर्चस्व का विरोध करने में उनकी भूमिका पर जोर देती हैं। कुछ विद्वानों का तर्क है कि ब्रिटिश शासन के प्रति उनके विद्रोह को, उनके समय की लिंग–आधारित अपेक्षाओं के प्रति उनके विद्रोह से अलग करके नहीं देखा जा सकता। एक सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व करके, उन्होंने न केवल ब्रिटिश औपनिवेशिक व्यवस्था को चुनौती दी, बल्कि उस भारतीय पितृसत्तात्मक व्यवस्था को भी चुनौती दी, जो सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी को सीमित करना चाहती थी। इस दोहरी चुनौती ने रानी लक्ष्मीबाई को भारत में नारीवादी आंदोलनों के लिए एक शक्तिशाली प्रतीक बना दिया है।

नारीवादियों ने उनकी छवि का उपयोग यह तर्क देने के लिए किया है कि पुरुषों की ही तरह, महिलाओं में भी नेतृत्व करने, लड़ने और उत्पीड़न का विरोध करने की क्षमता होती है। उनकी कहानी भारत में महिलाओं के अधिकारों की वकालत करने वाले आंदोलनों में विशेष रूप से प्रभावशाली रही है, क्योंकि यह दर्शाती है कि महिलाएँ, सबसे चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी, बदलाव की वाहक और अपने आप में सक्षम नेता बन सकती हैं[ix]।

भारत में समकालीन नारीवाद पर रानी लक्ष्मीबाई का प्रभावः

भारत में समकालीन नारीवादी आंदोलनों में रानी लक्ष्मीबाई की विरासत की गूँज आज भी सुनाई देती है। एक ऐसी योद्धा रानी के रूप में उनकी छवि, जिसने औपनिवेशिक शासन और पितृसत्ता, दोनों के खिलाफ लड़ाई लड़ी, उसे लिंग समानता और महिलाओं के अधिकारों की वकालत करने वाले नारीवादियों ने सहर्ष अपनाया है[x]। कई मायनों में, रानी लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संघर्ष और महिलाओं की मुक्ति के संघर्ष के मिलन बिंदु का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिससे वह राष्ट्रवादी और नारीवादी, दोनों ही तरह के विमर्शों में एक चिरस्थायी हस्ती बन गई हैं। उनकी विरासत को विभिन्न समकालीन आंदोलनों में याद किया गया है, जैसे कि लिंग–आधारित हिंसा के खिलाफ लड़ाई और राजनीति तथा नेतृत्व की भूमिकाओं में महिलाओं के अधिक प्रतिनिधित्व के लिए किया जाने वाला प्रयास।

नारीवादी संगठन अक्सर उनकी कहानी का उपयोग महिलाओं को सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने और अपने अधिकारों के लिए लड़ने हेतु प्रेरित करने के लिए करते हैं[xi]। उनका जीवन भारत में व्यापक नारीवादी संघर्ष का प्रतीक बन गया है, जो महिलाओं को याद दिलाता है कि वे विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी उत्पीड़न का विरोध करने और उस

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

पर विजय पाने की क्षमता रखती हैं। रानी लक्ष्मीबाई की छवि का उपयोग भारतीय समाज में अभी भी कायम पितृसत्ता के प्रचलित मानदंडों को चुनौती देने के लिए भी किया गया है। उनके जीवन–वृत्तांत का उल्लेख अक्सर उन नारीवादी समूहों द्वारा किया जाता है जो प्रजनन अधिकारों, महिलाओं की स्वायत्तता और लिंग–आधारित पदानुक्रमों को समाप्त करने की वकालत करते हैं। नारीवादी विद्वानों का तर्क है कि रानी लक्ष्मीबाई की विरासत केवल औपनिवेशिक शासन के प्रतिरोध तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें उनके समय के प्रतिबंधात्मक लिंग–संबंधी मानदंडों को मानने से उनका इनकार भी शामिल है[xii]।

समकालीन विमर्श में, उन्हें अक्सर अवज्ञा के प्रतीक के रूप में याद किया जाता है, विशेष रूप से उन आंदोलनों में जिनका उद्देश्य महिलाओं को गहरी जड़ें जमाए हुए पितृसत्तात्मक ढांचों से मुक्त कराना है। इसके अलावा, रानी लक्ष्मीबाई का जीवन नेतृत्व का एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत करता है जो लिंग–भेद से परे है। भारत में नारीवादी नेता उनकी भूमिका पर केवल एक प्रतीकात्मक हस्ती के रूप में ही नहीं, बल्कि एक सैन्य कमांडर के रूप में भी विशेष जोर देते हैं।

1857 के विद्रोह के दौरान उनके रणनीतिक और कूटनीतिक नेतृत्व का अध्ययन नारीवादी नेतृत्व–विमर्श के एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में किया गया हैय यह दर्शाता है कि पारंपरिक रूप से पुरुषों के वर्चस्व वाले क्षेत्रों में भी निर्णय लेने और नेतृत्व करने की समान क्षमता महिलाओं में भी होती है। उनकी विरासत महिलाओं के जुझारूपन और राजनीति, सेना तथा सामाजिक आंदोलनों जैसे क्षेत्रों में नेतृत्व करने की उनकी क्षमता का एक जीवंत प्रमाण है[xiii]।

निष्कर्ष:

एक नारीवादी आदर्श के रूप में रानी लक्ष्मीबाई की विरासत का आधुनिक भारतीय नारीवादी आंदोलनों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। औपनिवेशिक और पितृसत्तात्मक, दोनों ही प्रकार की सत्ता के प्रति उनकी अवज्ञा ने उन्हें नारी–शक्ति और सशक्तिकरण का एक चिरस्थायी प्रतीक बना दिया है। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, नारीवादी पुनर्व्याख्याओं और समकालीन नारीवादी सक्रियता पर अपने प्रभाव के माध्यम से, रानी लक्ष्मीबाई आज भी महिलाओं को उत्पीड़न का विरोध करने और अपने अधिकारों के लिए डटकर खड़े होने हेतु प्रेरित करती हैं।

रानी लक्ष्मीबाई की विरासत की निरंतर प्रासंगिकता लैंगिक हिंसा से निपटने वाले आंदोलनों, राजनीति में महिलाओं के अधिक प्रतिनिधित्व की आवश्यकता और लैंगिक समानता के व्यापक अभियानों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वह राष्ट्रीय स्वतंत्रता की लड़ाई और महिलाओं के अधिकारों के संघर्ष के मिलन बिंदु का प्रतीक हैं, जो भारत में महिलाओं द्वारा सामना किए जाने वाले संघर्षों की दोहरी प्रकृति को दर्शाता है। उनकी कहानी का जिक्र न केवल राजनीतिक प्रतिरोध में भागीदारी को प्रेरित करने के लिए किया जाता है, बल्कि उन गहरी

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

जड़ें जमाए पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देने के लिए भी किया जाता है जो आज भी समाज में महिलाओं की भूमिका को सीमित करते हैं।

रानी लक्ष्मीबाई का जीवन और विरासत हमें याद दिलाती है कि लैंगिक समानता का संघर्ष अभी भी जारी है। उनकी विरासत, भले ही 19वीं सदी में निहित हो, समकालीन नारीवादियों के लिए सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में कार्य करती है, और उन्हें औपनिवेशिक तथा पितृसत्तात्मक, दोनों प्रकार के उत्पीड़न के विरुद्ध लंबे समय से चले आ रहे प्रतिरोध की याद दिलाती है। आज भारत में नारीवादी उनके वृत्तांत से प्रेरणा लेकर विभिन्न प्रकार की संस्थागत असमानताओं के विरुद्ध सामूहिक कार्रवाई को प्रेरित और संगठित करती हैंय वे इस बात पर जोर देती हैं कि महिलाओं के अधिकारों का संघर्ष सामाजिक न्याय के व्यापक आंदोलनों के साथ ही जुड़ा हुआ है।

जैसे–जैसे भारत लैंगिक हिंसा, असमान राजनीतिक प्रतिनिधित्व और विभिन्न क्षेत्रों में भेदभाव जैसे मुद्दों से जूझ रहा है, रानी लक्ष्मीबाई की कहानी महिला नेतृत्व और प्रतिरोध की क्षमता का एक शक्तिशाली स्मरण कराती है। विपरीत परिस्थितियों के सामने उनका अडिग साहस और स्वायत्तता के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता आज भी ऐसे समाज में प्रासंगिक बनी हुई है, जो अभी भी गहरी जड़ें जमाए लैंगिक असमानताओं से जूझ रहा है। इस प्रकार, एक नारीवादी आदर्श के रूप में रानी लक्ष्मीबाई की विरासत पूरे भारत में महिलाओं के लिए आशा, शक्ति और प्रेरणा के एक प्रकाश–स्तंभ के रूप में कायम है।

संदर्भः

[i] अल्तेकर, ए. एस. (2016), 'हिंदू सभ्यता में महिलाओं की स्थितिः प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान तक', दिल्ली, पृ. 152.

[ii] थापर, रोमिला (1990) भारत का इतिहास, खंड 1. नई दिल्ली, पृ. 213.

[iii] फोर्ब्स, जेराल्डिन (1996), 'आधुनिक भारत में महिलाएं', कैम्ब्रिज, पृ. 58.

[iv] रॉय, कुमकुम (1999), 'लिंग की शक्ति और शक्ति का लिंगः प्रारंभिक भारतीय इतिहास में अन्वेषण', न्यूयॉर्क, पृ. 127.

[v] जैन, देवकी (2005), 'महिलाएं, विकास और संयुक्त राष्ट्रः समानता और न्याय के लिए साठ वर्षों की खोज', ब्लूमिंगटन, पृ. 45.

[vi] चौहान, सुभद्रा कुमारी (1946), झाँसी की रानी. इलाहाबाद, पृ. 5.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

[vii] सेनगुप्ता, पर्णा (2011), पेडागोजी फॉर रिलिजनः मिशनरी एजुकेशन एंड द फैशनिंग ऑफ हिंदूज एंड मुस्लिम्स इन बंगाल. बर्कले, पृ. 63.

[viii] सेनगुप्ता, पर्णा (2011), पेडागोजी फॉर रिलिजनः मिशनरी एजुकेशन एंड द फैशनिंग ऑफ हिंदूज एंड मुस्लिम्स इन बंगाल. बर्कले, पृ. 63.

[ix] चक्रवर्ती, उमा (1998), रीराइटिंग हिस्ट्रीः द लाइफ एंड टाइम्स ऑफ पंडिता रमाबाई. नई दिल्ली, पृ. 35.

[x] अल्तेकर, ए. एस., द पोजिशन ऑफ वीमेन इन हिंदू सिविलाइजेशनः फ्रॉम प्रीहिस्टोरिक टाइम्स टू द प्रेजेंट डे. दिल्ली, 2016, पृ. 152.

[xi] फोर्ब्स, जेराल्डिन (1996), वीमेन इन मॉडर्न इंडिया. कैम्ब्रिज, पृ. 58.

[xii] थापर, रोमिला (1990) 'भारत का इतिहास, खंड 1', नई दिल्ली, पृ. 213

[xiii] जैन, देवकी (2005), 'महिलाएँ, विकास और संयुक्त राष्ट्रः समानता और न्याय के लिए साठ वर्षों की खोज', ब्लूमिंगटन, पृ. 45